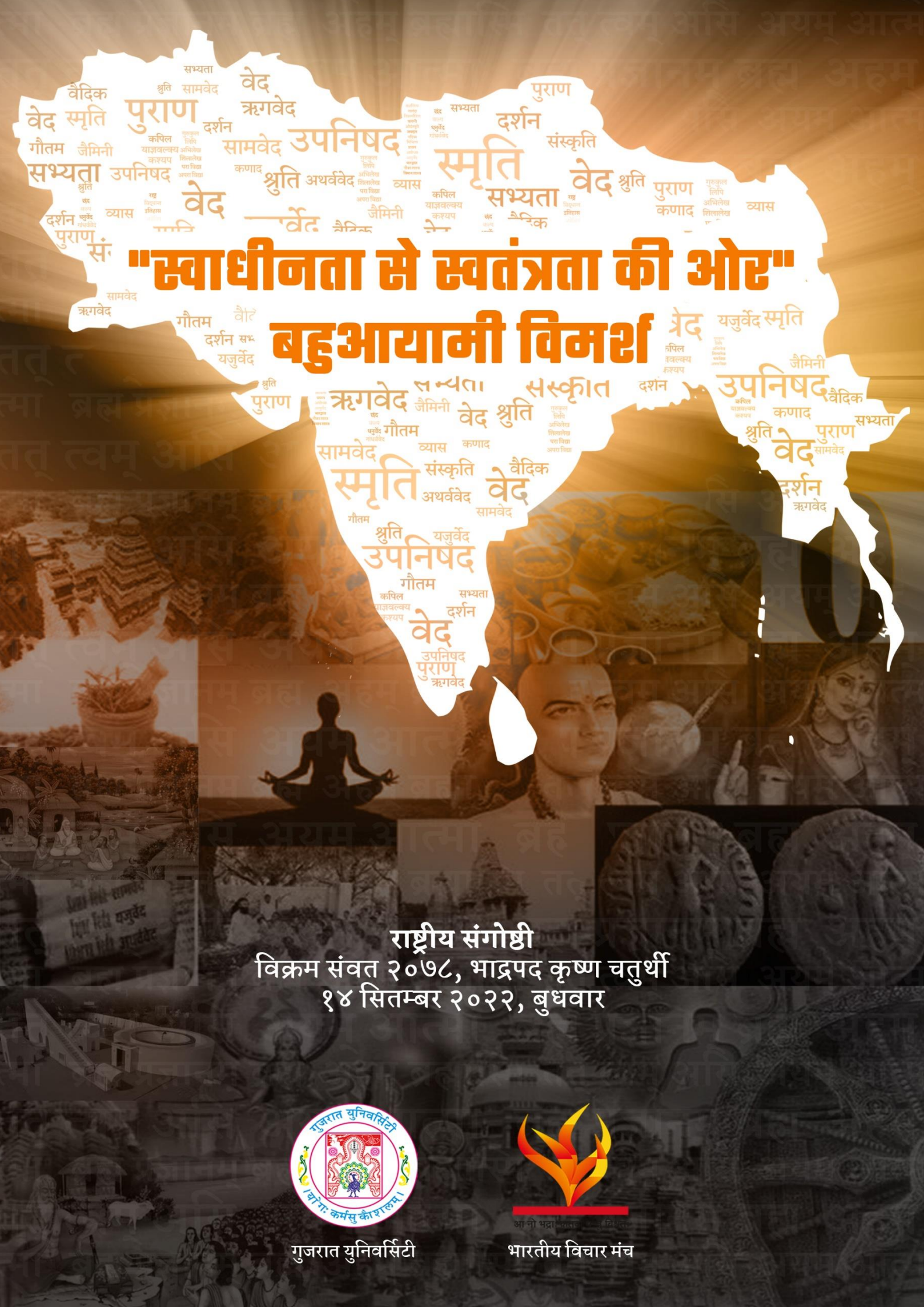

"स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर"
बहुआयामी विमर्श

राष्ट्रीय संगोष्ठी

विक्रम संवत २०७८, भाद्रपद कृष्ण चतुर्थी

१४ सितम्बर २०२२, बुधवार

गुजरात युनिवर्सिटी

भारतीय विचार मंच

स्वाधीनता से स्वतंत्रता की ओर
बहुआयामी विमर्श

यह वर्ष भारत की स्वाधीनताप्राप्ति का अमृतपर्व है। सम्पूर्ण वर्ष यह अमृतपर्व निमित्त शासकीय और अशासकीय केन्द्र तथा सामाजिक संस्था व संस्थानों में उत्साहपूर्ण अनेक कार्यक्रम आयोजित किए गए हैं । इस विषय में सबसे बड़ी भ्रामक मान्यता यदि समाज के बहुतांश लोगों में है तो वह यह है कि यह स्वातंत्र्यप्राप्ति का अमृतमहोत्सव है । स्वाधीनता और स्वतंत्रता दोनों बातों (संकल्पनाओं) में अन्तर है । भारतीय स्वाधीनता समर को अधिकतर परंतु एक अर्थ में एक अर्थ में कहें तो 15 अगस्त 1947 यह केवल सत्ता के हस्तांतरण का दिन था । जब कि स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए देश आज भी लालायित है । देश में कुछ लोग आज भी इसके लिए जुझ रहे हैं । तो यह स्वाधीनता आन्दोलन और स्वतंत्रता आन्दोलन का अर्थ, सन्दर्भ क्या है ? आइए इसे समझते हैं।

भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन भारत की राजनीतिक आत्मनिर्भरता हेतु (पैरों पर खड़े होने हेतु) हुआ एक जन आन्दोलन है । हमें आज यह बात जान कर आश्चर्य होगा की ब्रिटिश भारत में केवल भारत को स्वाधीन बनाने हेतु आन्दोलन नहीं हुआ। एक बहुआयामी और समग्रतालक्षी भारतीय दृष्टिकोण की पुनर्स्थापना हेतु आन्दोलन चला । स्वधर्म, स्वराज और स्वतंत्र - यह "स्व" त्रयी की प्राप्ति हेतु देश भर में दैवी ढंग से प्रयास चले । स्वाधीनता संग्राम के बारे में कुछ विमर्श चलें या चलाएं ऐसा हम कह सकते हैं । उसके उपरांत बहुत सी ऐसी बातों को हमसे छिपाया गया, जो प्रत्येक भारतीय के लिए जान लेना जरूरी है।

यह स्वाधीनता आन्दोलन व्यापक ढंग से सम्पूर्ण भारतवर्ष में चला । उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम चारों दिशाओं में एक साथ भारत को स्वाधीन बनाने हेतु नामीअनामी अनेक देशभक्तों ने अपना जीवन समर्पित किया । इस आन्दोलन की कुछ बातें हैं जो हम जानते हैं पर बहुत सारी बातें हैं जो हम आज तक नहीं जान पाए, यह पर्व है ऐसे हुतात्माओं के कार्य को हम जानें व अन्य लोगों तक पहुंचाएं । यह स्वाधीनता आन्दोलन था स्वराज से जुड़ा जो अपने देश में स्वशासन स्थापना हेतु था । राजनीतिक दृष्टिकोण से स्वशासित होने के लिए समग्र भारतवर्ष में त्रावणकोर के राजा मार्तंड वर्मा, शिवगंगा की रानी वेलु नाचियार, रानी गाइडिनल्यू, बाबा तिलका मांझी, बिरसा मुंडा, गोविन्द गुरु जैसे कई लोगों ने इस 'स्व' की लड़ाई में स्वशासन के साथ साथ स्वधर्म के लिए भी

लोगों में अलख जगाई । यह सम्पूर्ण आन्दोलन 'स्व' से प्रेरित था । स्वधर्म जगाने हेतु एक ही काल में भारत के विभिन्न क्षेत्रों में पुंथानम, गुरु नानकदेव, शंकरदेव तथा नरसिंह महेता जैसे दिव्य पुरुषों ने ज्योति जलाई । इस स्वधर्म में से भी तो स्वराज का ही अलख जगा । अंग्रेजों ने इसे तोड़ने हेतु और हमें भ्रमित करने हेतु अंग्रेजी शिक्षा से प्रेरित राजा राममोहन राय जैसे लोगों को तैयार किया । ताकि हमारे मस्तिष्क को धूम्राच्छादित रखा जाएं और हम हमारे स्व से विचलित रहें । जितना ही 'स्व' से यह आन्दोलन प्रेरित हुआ, अंग्रेजों ने हमें विचलित करने हेतु अनेक दुष्प्रयास किए।

'स्व' तंत्र की स्थापना हेतु अनेक विद्वदजनों ने प्रयास किए । जिसमें हिन्दू राजनीति के अद्येता काशीप्रसाद जायस्वाल, हिन्दू केमेस्ट्री के अद्येता पी सी राय, भारतबोध जगाने हेतु हिन्दू मेला के स्थापक नवगोपाल मित्र, पुणे सार्वजनिक एसोसिएशन जिसमें माधव गोविन्द रानडे, लोकमान्य तिलक, गोपालकृष्ण गोखले जैसे कई लोगों ने प्रयत्न किए । यह सारे प्रयत्नों के बावजूद भारत को तोड़ने के लिए अंग्रेजो ने वर्ण - जाति, लिंग, संस्कृति, सभ्यता, ज्ञान - विज्ञान, परम्परा इत्यादि सारी व्यवस्थाओं को नष्ट करने हेतु अनेकानेक प्रयास किए । इसी क्रम में कम्पनी सरकार ने जो अंग्रेजी शिक्षा, मिशनरी और मतांतरण को शासकीय परवाना दिया, भारतीय लोगों को भारतीय होने में शर्म आए ऐसे एक शासन के बाद ब्रिटिश ताज (Crown) का शासन प्रविष्ट हुआ । उन्होंने यह प्रयासों को अधिक तीव्र गति से आगे बढ़ाया । भारतीय सामाजिक ढांचे में जातियोँ के भीतर खाई बनाना, बढ़ाना जैसे कई प्रयास शुरू किए । कई जातियोँ के जातिगत व्यवसाय बंद करवा दिए और उन्हें धीरे धीरे पिछड़ी जाति ऐसा एक नाम देना प्रारम्भ किया । यही स्थिति राष्ट्रजीवन तथा समाजजीवन के विभिन्न क्षेत्रों में स्थापित करना उन्होंने प्रारम्भ कर दिया था । भारतवर्ष की आनेवाली नई पीढ़ियां अपनी ज्ञान संपदा और परम्परा से वंचित होती गई । मात्र वंचित होती गई ऐसा भी नहीं तो उसी के साथ कुछ लोगों के हृदय में भारतीय होना शर्मनाक होता है, ऐसी भी एक मानसिकता जाग्रत होना प्रारम्भ हुआ । ठीक उसी कालखंड में भारत की 'स्व' त्रयी का जागरण प्रारम्भ हो गया था । परन्तु उसे मुख्यधारा से दूर रखने में अंग्रेज सफल रहे ।

समस्या यह हुई की स्वाधीनता प्राप्ति को इसी भ्रमणा की स्थिति में एक बडे वर्ग ने अर्थात बहुतांश लोगो ने स्वातंत्र्यप्राप्ति मान लिया । मात्र स्व शासन हेतु हुए स्वाधीनता आन्दोलन को लोगों ने सीमित अर्थ में स्वातंत्र्य आन्दोलन मान लिया । स्वाधीनता प्राप्ति से आगे बढ़ कर हमें 'स्व' तंत्र प्राप्ति हेतु आगे बढ़ना है, यह विचार तत्कालीन समय में मुख्यधारा में आ नहीं पाया। धीरे धीरे श्रीमती गांधी द्वारा घोषित आपातकाल के बाद यह विषय थोड़ा थोड़ा मुख्यधारा में आना शुरू हुआ । आज

यह स्वाधीनता प्राप्ति के ७५ वे वर्ष तक जब हम पहुँचे हैं तो हमारा और विशेषरूप से विचारवंतों का यह दायित्व है कि स्वाधीनता से स्वतंत्रता की इस सफर को समझें और आगे बढ़ाएं । पिछले कुछ वर्षों की बात करें तो भारत में शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति २०२०, कृषि, ग्राम विकास के चल रहें और बढ़ रहें स्वदेशी प्रकल्प, आयुर्वेद और गौ माता के आधार पर चलने वाले प्रकल्पों की बढ़ती संख्या, शासनतंत्र में भारतीय बजेट का नाम और उसे पेश करने का ढंग बदल कर के लाल वस्त्र में लपेट कर "बही खाता" लाने की शुरुआत की, भारतीय सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति रमन्नाजी ने भी न्याय और विधि व्यवस्था का भारतीयकरण करने की मांग की। यह सारें ऐसे उदाहरण हमारे सामने कुछ वर्षों में प्रस्तुत हुए है, जिसके आधार पर यह तो स्पष्ट है की हमारी दिशा ठीक है, बस आवश्यकता है धैर्य और आग्रहपूर्वक अन्यों को यह स्वाधीनता आन्दोलन से स्वतंत्रता के विषय में विभिन्न माध्यमों से माहिती पहूँचा कर के जाग्रत करें । आने वाले काल में दैशिक मानसिकता के आधार पर पुनर्स्थापित एक भारतीय व्यवस्थातन्त्र खड़ा हो उस हेतु से विचारविमर्श, शोध, प्रचार प्रसार तथा सारे कार्य करें और अन्यों को प्रेरित करें।

इसी दिशा में एक और कदम आगे बढ़ने हेतु भारतीय विचार मंच द्वारा "स्वाधीनता से स्वतंत्रता की और - बहुआयामी विमर्श" विषय पर एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई हैं।

भवदीय,

ईशान जोशी

मंत्री, भारतीय विचार मंच

बीज भाषण

मान्यवर श्री मोहनराव भागवत

(सरसंघचालक, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ)

वक्तागण

पूज्य श्री गोविंददेव गिरी जी महाराज

(कोषाध्यक्ष, श्री राम जन्मभूमि मन्दिर तीर्थक्षेत्र, अयोध्या)

श्री सुधांशु त्रिवेदी

(संसदसभ्य, राज्यसभा, प्रसिद्ध विचारक)

सुश्री निवेदिता भिड़े

(अध्यक्षा, विवेकानन्द केन्द्र - कन्याकुमारी)

समापन

सुश्री इंदुमती काटदरे

(कुलाधिपति, पुनरुत्थान विद्यापीठ)

संगोष्ठी प्रारम्भ : प्रातः 10.00 बजे से, 14 सितम्बर 2022, बुधवार

समापन : सायं 7.00 बजे, 14 सितम्बर 2022, बुधवार

स्थान

सभागृह, गुजरात विश्वविद्यालय, अमदावाद, गुजरात

(संगोष्ठी स्थान रेलवे स्टेशन से 10 किमी, हवाई अड्डे से 20 किमी और बस स्टेशन से 7 किमी की दूरी पर है।)

सहयोग राशि

300 ₹ व अधिक

पंजीकरण

https://rzp.io/l/bvm-national-seminar

सूचनाएं

1. संगोष्ठी में पूर्ण समय रहना अपेक्षित है ।
2. अग्रिम पंजीकरण अनिवार्य है, पंजीकरण के बाद व्यवस्था की अनुमति से ही आप प्रवेश प्राप्त कर सकते है ।
3. निश्चित समय तक (06 अगस्त से 31 अगस्त 2022 तक) पंजीकरण खुला रहेगा । (सभागृह की मर्यादानुसार पहले भी पंजीकरण बंद हो सकता है)
4. दूर से आने वाले प्रतिभागियों के लिए निवास व्यवस्था उपलब्ध है। जिसे आवश्यक है, वे कृपया पंजीकरण में उसका उल्लेख जरूर करें।
5. निवास व्यवस्था 13 सितम्बर सायंकाल से, 15 सितम्बर प्रातःकाल तक रहेगी ।
6. रेलवे स्टेशन, बस स्टेशन और हवाई अड्डे से आप अपनी व्यवस्था से आवागमन करेंगे ।
7. गोष्ठी के स्थान पर स्थित वैचारिक साहित्य बिक्री केन्द्र का आप लाभ ले सकते है।

सम्पर्क

अनल वाघेला: +919824803187

केदार देशमुख : +919033811014

admn_bvm@vichar.org

***